आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्र शास्वत एंव प्राचीनतम चिकित्सा शास्त्र है। इसका विकास हजारों वर्षों पूर्व हुआ है, फिर भी इसके मूल सिद्धांत अब भी अपरिवर्तनीय एंव अटल है क्योंकि आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्र अनुभव पर आधारित है।

लांजेवार टोटल हेल्थ
आयुर्वेदिक क्लिनीक - पंचकर्म सेंन्टर

में आयुर्वेदिक चिकित्सा शास्त्रों के पारंपरिक स्वरूपों का पालन करते हुए एवं उनके वैज्ञानिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर शास्त्रोक्त आयुर्वेदिक एवं पंचकर्म चिकित्सा की जाती है।

We bring you the traditional practices of Ayurveda.

पंचकर्म चिकित्सा

- पंचकर्म शुद्धिकरण प्रक्रियाओं से संबंधित चिकित्साओं के पाँच कर्म प्रक्रियाऐं का समुह है। यह आयुर्वेद की विशिष्ट चिकित्सा पद्धति है जिसके द्वारा शरीर को रोगमुक्त रखा जाता है।

पंचकर्म का महत्व

- स्वेद ग्रंथियों, मूत्र मार्ग, आँत्रों आदि द्वारा दूषित अपशिष्ट पदार्थों को उत्सर्जित करने वाले मार्गों के माध्यम से शरीर से 'दूषित दोषों' को साफ करता है।
- दोषों में संतुलन बनाऐं रखता है।
- शरीर के विषों को बाहर निकालकर शरीर को रोगमुक्त किया जाता है। इसी के द्वारा रोगो का निवारण भी हो जाता है।
- शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

"स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणम्। आतुरस्य व्याधि प्रशमनम् च।।"

आयुर्वेदिक चिकित्सा शास्त्र न केवल रोगों को दूर करता है अपितु स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ को बनाए रखने में भी मदत करता है जिससे व्यक्ति स्वस्थ एवं निरोगी रहें।

अभ्यंग

स्नेह द्रव्यों का शरीर में प्रयोग कर रोगों को दूर करवाना, अभ्यंग या स्नेहन कहलाता है। यह वातरोग, आमवात, शरीरिक एवं मानसिक थकावट, स्पांडिलाइटिस, सोरियासिस, अनिद्रा, पक्षाघात, गृध्रसी, कटिगतवात, मांसक्षयता इत्यादि रोगों में विशेष लाभप्रद होता है।

उपचार की समय सीमा
45 मिनट से 60 मिनट

कायसेक (तैल धारा)

यह विशेष प्रकार की प्रक्रिया है जिसमे सुखोष्ण तैल को शरीर के विभिन्न भागों के उपर सतत् धारा गिराकर व्याधि को दूर कराया जाता है। यह विशेषतः वातरोग, सर्वांगशूल, पक्षाघात, मांसक्षयजन्य व्याधि, तनाव, इत्यादि रोगों में विशेष लाभप्रद होता है।

उपचार की समय सीमा
45 मिनट से 90 मिनट

नस्य

औषधि द्रव्यों या औषधि सिद्ध स्नेह द्रव्यों, या औषधि धूम को नासा (नाक) मार्ग से शरीर के अंदर पहुचाना, नस्य कहलाता है। इसे कान, नाक, गले तथा सिर के समस्त रोगों की उत्तम चिकित्सा कहा गया है।

उपचार की समय सीमा
15 मिनट से 30 मिनट

कटि बस्ति

कटि प्रदेश में उड़द दाल के आटे को गुंथ कर, आहवाल बनाकर उसमें सूखोष्ण स्नेह औषधि द्रव्यों को विशेष समय तक रखना, कटि बस्ति कहलाता है। यह वातरोग, कमरदर्द, कमर की सूजन, पक्षाघात, गृध्रसी, कटिगत्वात, इत्यादि रोगों में विशेष लाभप्रद होता है।

उपचार की समय सीमा
35 मिनट से 45 मिनट

शष्टीशालि पिण्डस्वेदन

यह एक विशेष प्रकार की प्रक्रिया है जिसमें विशेष शष्टीशालि चावल को दूध और औषधि में उबालकर शरीर का स्नेहन, स्वेदन किया जाता है। वातरोग, शरीरदर्द, पक्षाघात, गृध्रसी, मांसक्षयता इत्यादि रोगों में विशेष लाभप्रद होता है।

उपचार की समय सीमा
45 मिनट से 90 मिनट

शिरोधारा

सिर पर तैल आदि की व्याधि अनुसार सतत धारा गिराने की प्रक्रिया शिरोधारा कहलाती है। यह अनिद्रा, स्मृतिनाश, माइग्रेन, गर्दन आंख कान नाक के दर्द, और मानसिक तनाव, मस्तिष्क रोगों एंव बाल झडने की बीमारियों के लिए उत्तम है।

उपचार की समय सीमा
45 मिनट से 90 मिनट

उद्वर्तन

शुष्क/आर्द्र औषधि द्रव्यों का त्वचा में मर्दन कर त्वचा में आश्रित दोषों को पिघलाकर निकालने की विधि उद्वर्तन कहलाता है। इससे रक्त परिसंचरण सुचारू रूप से हो पाता है। यह मेदोरोग, स्थौल्य, आमवात इत्यादि रोगों में विशेष लाभप्रद होता है।

उपचार की समय सीमा
45 मिनट से 90 मिनट

स्वेदन

इस प्रक्रिया में औषधि द्रव्यों के भाप द्वारा शरीर का स्वेदन (पसीना लाना) करवाया जाता है। इससे शरीर तथा संधियों का भारीपन, जकडन, वेदना, वातरोग, गृध्रसी, पक्षाघात, आमवात, संधिवात, कटिवात, मोटापा, बलक्षयता इत्यादि रोगों में विशेष लाभप्रद होता है।

उपचार की समय सीमा
10 मिनट से 20 मिनट

जानु बस्ति

जानु (घुटना) प्रदेश में उड़द दाल के आटे को गुंथ कर, आहवाल बनाकर उसमें सूखोष्ण स्नेह औषधि द्रव्यों को विशेष समय तक रखना, जानु बस्ति कहलाता है। यह घुटने के दर्द, जोडो के दर्द वातरोग, संधिगतवात, इत्यादि रोगो में विशेष लाभप्रद होता है।

उपचार की समय सीमा
35 मिनट से 45 मिनट

मन्या (ग्रीवा) बस्ति

मन्या (गर्दन) प्रदेश में उड़द दाल के आटे को गुंथ कर, आहवाल बनाकर उसमें सूखोष्ण स्नेह औषधि द्रव्यों को विशेष समय तक रखना, मन्या (ग्रीवा) बस्ति कहलाता है। यह वातरोग, चक्कर आना, गर्दन का दद, अकडन सूजन, स्पांडिलाईटिस, इत्यादि रोगों में विशेष लाभप्रद होता है।

उपचार की समय सीमा
35 मिनट से 45 मिनट